# 5

# शक्ति के प्रतीक के रूप में वास्तुकला, किले एवं धार्मिक स्थल

**मुख्यमंत्री बिहार दर्शन योजना के अन्तर्गत बच्चे अपने विद्यालय से शैक्षणिक परिभ्रमण पर बोधगया पहुँचे। वहाँ सबसे पहले उन्होंने विश्व प्रसिद्ध महाबोधि मंदिर को देखा जिससे वे बहुत प्रभावित हुए। उनमें से कुछ बच्चों ने अपने शिक्षक के सहयोग से मंदिर निर्माण की शैली (संरचना), उसमें प्रयुक्त सामग्री, निर्माता के उद्देश्य, उसका काल, इत्यादि से सम्बन्धित प्रश्न पूछे।**

महाबोधी मंदिर

आप कक्षा छः में पढ़ चुके हैं कि किस तरह से तत्कालीन शासकों ने अपने धार्मिक विश्वासों को व्यक्त करने के लिए बौद्ध, जैन और हिन्दू धर्म से जुड़े उपासना स्थलों का निर्माण करवाया। मध्यकालीन शासकों ने भी इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर स्थापत्य कला के कई नमुने निर्मित करवाया। इस काल में शासकों ने अपने धार्मिक विश्वासों के अलावा राजनैतिक शक्ति और प्रभाव को भी इमारतों के निर्माण द्वारा व्यक्त किया। मध्यकाल का शासक वर्ग अपनी सत्ता को वैध ठहराने, शासन को स्थायी बनाने तथा पड़ोसी राज्य से अपने राज्य को श्रेष्ठ साबित करने आदि के उद्देश्य से बड़े पैमाने पर

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

इमारतों और धार्मिक स्थलों का निर्माण करवाया गया। आठवीं से अठारहवीं शताब्दियों के बीच भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग निर्माण शैलियों में राजाओं एवं उनके अधिकारियों द्वारा दो तरह की इमारतों का निर्माण किया गया। पहली तरह की इमारतों में किले महल तथा मकबरे थे जो राजाओं एवं बादशाहों के निजी हितों के लिए थे दूसरी श्रेणी में मंदिर, मस्जिद, हौज, कुएँ, सराय, बाजार जैसी इमारतें धार्मिक और लोगों के उपयोग से जुड़ी थीं।

> लिंगराज और महाबोधि मंदिर की संरचना में क्या अंतर दिखता है

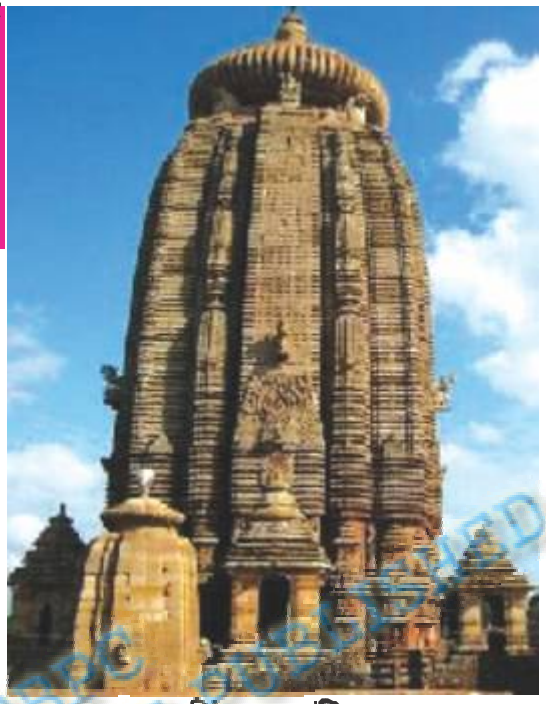



लिंगराज मंदिर

© JBSTBPE
WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

सरंचना शैली और निर्माण सामग्री के उपयोग के आधार पर इस काल में बनने वाली इमारतों को तीन भाग में बाँट सकते हैं। पहले भाग के अन्तर्गत आठवीं से तेरहवीं सदी के बीच बने मंदिरों को रखा जा सकता है। मंदिरों का निर्माण मुख्यतः नागर और द्रविड़ नामक दो शैलियों में हुआ। वस्तुतः इस काल में स्थापत्य कला के सभी रूपों का विकास हुआ, जिसमें मंदिर ही अभी बचे हैं।

आपने पुरी के जगन्नाथ मंदिर या खजुराहो (मध्य प्रदेश) में बने मंदिरों के विषय में सुना होगा। यह अपने निर्माण शैली भव्यता और मजबूती के लिए विश्व में आज भी प्रसिद्ध है। इन मंदिरों का निर्माण नागर शैली में हुआ था। इस शैली के मंदिर आधार से शीर्ष तक आयताकार एवं शंक्वाकार संरचना में बनी होती। शीर्ष क्रमशः पतला होता जाता है जिसे 'शिखर' कहा जाता है। मंदिर के केन्द्रीय भाग में प्रधान देवता की मूर्ति स्थापित होती है जिसे 'गर्भ–गृह' कहा जाता है। मंदिर चारों तरफ अलंकृत स्तंभों पर

टिकी होती है। यह प्रदक्षिणा पथ से भी घिरा होता है। गर्भ गृह के पीछे और अगल–बगल झरोखा बना होता है। उस समय मंदिरों का निर्माण मुख्यतः पत्थरों को तराश कर क्रमिक रूप से एक दूसरे के साथ जोड़ते हुए बनाया जाता था।

आपके गाँव के मंदिर में नागर शैली की कौन सी विशेषता दिखती है।

## कोणार्क का सूर्य मंदिर

**तेरहवीं शताब्दी में निर्मित वास्तुकला की महान उपलब्धि, कोर्णाक का सूर्य मंदिर है। सूर्य पौराणिक कथाओं में अपने सात घोड़ों वाले रथों पर सवार होकर आकाश में चलता है। इसी दृश्य को मंदिर के रूप में अभिव्यक्त किया गया है। मंदिर को रथ का रूप दिया गया है। मंदिर का आधार एक विशाल चबूतरा है। इसके चारों ओर पत्थर के तराशे हुए बारह पहिए लगाए गए हैं और सूर्य के रथ का पूरा अहसास कराने के लिए चबूतरे के सामने जो सीढ़ियाँ हैं उनसे सात अश्वों की स्वतंत्र मूर्तियाँ ऐसे लगी हैं जैसे ये सातों घोड़े रथ को खींच रहे हैं। इसी चबूतरे पर मंदिर के दो भवनों देवकुल और जगमोहन का निर्माण किया गया था। मंदिर की बाह्य दिवारें उकेरी हुई आकृतियों से सजी हुई हैं। ये आकृतियाँ फूल–पत्तियों, पशु–देव–दानव, काल्पनिक पशुओं के रूप में बड़े आकार में उत्कीर्ण हैं।**

WEBCOPY BSMBPC NOT FOR PUBLISHED

कोणार्क सूर्य मंदिर और मीनाक्षी मंदिर के उपरी भाग में क्या अन्तर है?

इसी काल में दक्षिण भारत में मंदिर स्थापत्य कला की 'द्राविड़' शैली का विकास हुआ। इसकी विशेषता थी कि गर्भ गृह के ऊपर कई मंजिलों का निर्माण होता था जिसकी संख्या पाँच से सात तक होती थी। इसे 'विमान' का नाम दिया गया। स्तम्भों पर टिका एक बड़ा कमरा होता था जिसे मंडप कहा गया। गर्भ गृह के सामने अलंकृत स्तम्भों पर टिका एक बड़ा कक्ष होता था। जिसमें धार्मिक अनुष्ठान किए जाते थे। सम्पूर्ण मंदिर की संरचना ऊँची दीवारों से घिरी होती जिसमें एक प्रवेश द्वार होता था वह बहुत भव्य और अलंकृत होता था। इसे 'गोपुरम्' कहा जाता है। इसका सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण मदुरै के मीनाक्षी सुन्दरेश्वर मंदिर है। तंजौर का वृहदरेश्वर मंदिर द्रविड़ शैली में ही निर्मित है लेकिन सामान्यतया दिखने में वह नागर शैली की विशेषताओं से परिपूर्ण लगता है। इस तरह के मंदिरों का निर्माण एक साथ शासकों की शक्ति, धन–वैभव और भक्ति भाव को प्रदर्शित करते हैं। इसका प्रमाण है वृहदरेश्वर मंदिर से जुड़ा एक अभिलेख। इससे यह ज्ञात होता है कि मंदिर का निर्माण राजाराजदेव ने अपने देवता की उपासना हेतु किया था जिसका नाम राजाराजेश्वरम् था। शासक और भगवान के नाम में समानता का

मीनाक्षी मंदिर मदुरै

सुन्दरेश्वर मंदिर मदुरै

WEBCOPY © RSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

चित्र 5 क

मेहराब का 'विशुद्ध' रूप

मेहराब के मध्य में 'डाट' अधिरचना के

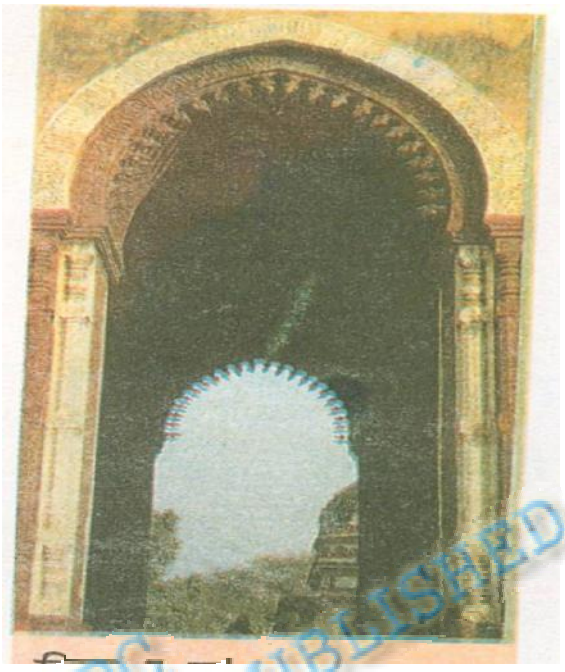

**मेहराब का डॉट अधिरचना रूप** **मेहराब निर्माण की टोडा तकनीक**

उद्देश्य था जनता के समक्ष अपने आप को ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में पेश करना। धार्मिक अनुष्ठान में भी देवता और राजा दोनों की उपासना की जाति थी। राजा का देवता मंदिर का प्रधान देवता होता था तो लघु देवता उसके सहयोगियों और अधीनस्थों के। इस प्रकार मंदिर और उसमें स्थापित देवी देवता शासक और उसके सहयोगियों द्वारा शासित क्षेत्र का छोटा रूप था।

द्वितीय भाग के अन्तर्गत तेरहवीं से सोलहवीं सदी के बीच बनी इमारतों को रखते हैं। इस काल की इमारतें स्थापत्य कला के सभी विधाओं में नयी है। इसका निर्माण मुस्लिम शासकों द्वारा किया गया था। इस काल में भारत में एक नए शासक वंश (तुर्क अफगान शासक वर्ग) की स्थापना हुई। नए शासक वर्ग की पहली आवश्यकता थी रहने के लिए भवन और अपने समर्थकों हेतु पूजा स्थलों का निर्माण। पूजा स्थल उपलब्ध करने के लिए पहले से मौजूद कुछ मंदिरों एवं अन्य इमारतों को मस्जिदों में परिवर्तित किया। भारत में बनने वाली पहली मुस्लिम उपासना स्थल

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

कुव्वत–उल–इस्लाम (इस्लाम की शक्ति) मजिस्द है जो दिल्ली स्थित कुतुबमीनार परिसर में है। इस काल में मेहराब और 'गुम्बद' नामक दो नवीन स्थापत्य शैलियों का प्रयोग बड़े पैमाने पर शुरू हुआ। गुम्बद इमारतों को भव्य बना देता था तो मेहराब उसे मजबूती प्रदान करता। मेहराब का दो रूप इस समय भारत में प्रचलित हुआ। इन दोनों में कुछ अंतर है जिसे आप इनके नाम के साथ दिए गए चित्र में स्पष्ट कर सकते हैं।

शैली में परिवर्तन के साथ–साथ निर्माण सामग्रियों में भी नई चीजें आईं। अब चूना पत्थर, और सुर्खी का प्रयोग बढ़ा। यह उच्च श्रेणी का गारा होता था जो पत्थर के टुकड़ों के मिलाने में सहायक था। इसकी वजह से विशाल ढाँचा का निर्माण सरल और तेज हुआ। इससे पहले भारत में इमारतों को बनाने में शहतीर के उपयोग पर आधारित क्षैतिज शैली को अपनाया जाता था जिसमें एक विस्तृत संरचना का निर्माण संभव नहीं था।

**कुतुबमीनार इस्लामी शक्ति का प्रतीक :–** तुर्कों की भव्य इमारत कुतुबमीनार है। इसका निर्माण दिल्ली सल्तनत के संस्थापक कुतुबउद्दीन ऐबक द्वारा शुरू करवाया गया। उसने इसे सूफी संत कुतुबउद्दीन बख्तियार काकी की याद में बनवाना शुरू किया था। यह पाँच मंजिल की इमारत है जिसकी कुल ऊँचाई 71.4 मी0 है। पहली मंजिल ऐबक द्वारा बनवाया गया था। अगली तीन मंजिल इल्तुतमिश ने 1229 में बनवाया। इस मीनार का शीर्ष वज्रपात या बिजली गिरने के कारण टूट गया था। जिसकी मरम्मत फीरोज तुगलक ने

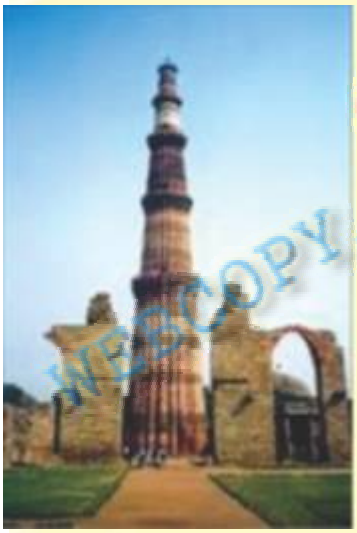

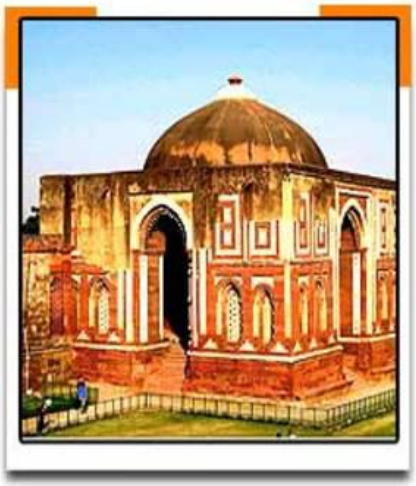

अलाई दरवाजा

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

**करवाया साथ ही उसी ने इसमें एक मंजिल और जोडा। इसका मुख्य आर्कषण इसके छज्जे है जो मीनार से जुड़े हुए हैं। लाल और सफेद बालू पत्थर तथा संगमरमर से इसका निर्माण हुआ है। कुतुबमीनार का निर्माण इस्लामी शैली में हुआ।**

मेहराब के वैज्ञानिक विधि का पहली बार प्रयोग कुतुबमीनार के प्रवेश द्वार अलाई दरवाजा मे देखते हैं यह कुतुबमीनार परिसर में स्थित है। इस्लामी शैली के मेहराब के निर्माण के लिए यह इमारत भारत में प्रसिद्ध है। तुगलक कालीन स्थापत्य में गयासुद्दीन का मकबरा एक नई शैली की ओर संकेत करता है। इसने भारतीय और इस्लामी शैलियों का सुंदर एवं संतुलित समावेश हुआ है। तुगलक काल में भवनों का निर्माण बड़े पैमाने पर हुआ। इस काल की इमारत ऊँचे चबूतरे पर और गुम्बद संगमरमर का बनाया गया है।

दिल्ली सल्तनत के कमजोर होने के साथ-साथ वहाँ के कलाकारों का अन्य क्षेत्रों में पलायन हुआ। वहाँ स्थानीय शासकों ने जिनका उदय सल्तनत काल के पतन के बाद हुआ, इन्हें संरक्षण प्रदान किया। इन राज्यों में स्थानीय विशेषताओं को ग्रहण कर स्थापत्य कला का काफी विकास किया गया। ऐसे स्थानीय राज्य जिसने कला का बहुत संरक्षण दिया, वे थे गुजरात, बंगाल, जौनपुर और मालवा।

**अटाला मस्जिद जौनपुर**

आप यह जानते होंगे कि बारहवीं शताब्दी में बिहार में तुर्कों का अधिकार हो गया था। इसके बाद बिहार में भी तुर्क अफगान शैली में इमारतों का निर्माण शुरू हुआ इनमें आरंभिक इमारत हैं बिहार शरीफ स्थित मलिक इब्राहिम या मलिक बया का मकबरा, तेलहड़ा का मस्जिद, बेगुहजाम की मस्जिद।

**"मलिक बया का मकबरा"**

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

**बिहार में तुर्क काल की सबसे महत्वपूर्ण इमारत बिहारशरीफ स्थित मलिक इब्राहिम या मलिक बया का मकबरा है। इसका निर्माण 1353 में हुआ। इस पर दिल्ली की तुगलक शैली का प्रभाव है। इसकी प्रेरणा गयासुद्दीन तुगलक के मकबरे से ली गई है। इसमें ढलवाँ दीवारें और गुम्बद बनाया गया है। इसका निर्माण ईंटों से हुआ है मलिक इब्राहिम प्रसिद्ध सूफी संत थे। इस मकबरे का निर्माण इनके लड़के सैयद दाउद द्वारा किया गया।**

स्थापत्य कला के विकास के तृतीय भाग के अन्तर्गत मुगल काल में बनी, इमारतों को रखा जा सकता है। मुगलों ने भव्य महलों, किलों, विशाल द्वारों, मस्जिदों, एवं बागों का निर्माण करवाया। मुगल शासकों ने व्यक्तिगत स्तर पर इमारतों के निर्माण में रूचि दिखाई विशेषकर शाहजहाँ ने। मुगल कला का आरंभिक रूप बागों के निर्माण में दीखता है। इसकी शुरुआत बाबर के द्वारा हुई। उसने अपनी आत्म कथा में औपचारिक रूप से बागों की योजनाओं और उनके बनाने में अपनी रूचि का वर्णन किया है। बाग दीवार से घिरे होते थे तथा कृत्रिम नहरों द्वारा चार भागों में विभाजित आयाताकार अहाते में स्थित होते थे। चार समान हिस्सों में बँटे होने के कारण ये चार बाग कहलाते थे। कुछ सर्वाधिक सुंदर चार बागों जैसे काश्मीर, आगरा और दिल्ली में जहाँगीर और शाहजहाँ ने बनवाया था।

मुगल स्थापत्य कला का व्यवस्थित एवं वास्तविक विकास अकबर के काल से शुरू हुआ। अकबर द्वारा निर्मित इमारतों में इस्लामिक हिन्दू, बौद्ध, जैन तथा स्थानीय शैलियों का समावेश हुआ है। उसने आगरा और फतेहपुर सीकरी में किले और महलों का निर्माण करवाया। यहाँ की सबसे महवपूर्ण इमारत बुलंद दरवाजा है जो अर्ध गुम्बदशैली में बना है। इन इमारतों का निर्माण लाल बलुआ पत्थर से किया

हुमायूँ के मकबरे में स्थित चार बाग

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

गया। साम्राज्य के विस्तार के साथ उसके संसाधन बढ़े इससे स्थापत्य कला का विकास भी हुआ। जहाँगीर के शासन काल के अन्त में पूरी तरह से संगमरमर की इमारतें बनने लगीं। इनकी दीवारों पर कीमती पत्थरों की नक्काशी की गई। हुमायूँ और एतामादुदौला का मकबरा इसका एक अच्छा उदाहरण है। इन दोनों मुगलकालीन इमारतों में एक नई शैली का सूत्रपात हुआ, जैसे हुमायूँ के मकबरा में गुम्बद पूर्णतः संगमरमर का बना है। इसमें ऊँचा, मेहराबयुक्त, प्रवेश द्वार का प्रयोग पहली बार हुआ। एतमादुद्दौला के मकबरा में पहली बार पितरा दूरा अथवा रंगनी पत्थरों से पच्चीकारी का प्रयोग किया गया। आगे चलकर इसका पूरा इस्तेमाल ताजमहल में हमें दिखाई पड़ता है। एतमादुद्दौला नूरजहाँ का पिता था जिसका प्रभाव जहाँगीर के काल में नूरजहाँ के कारण बहुत अधिक रहा। नूरजहाँ के प्रयासों से ही यह मकबरा बना था।

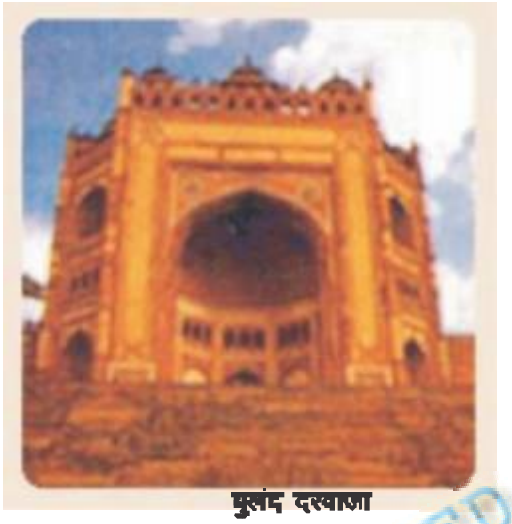

बुलंद दरवाजा

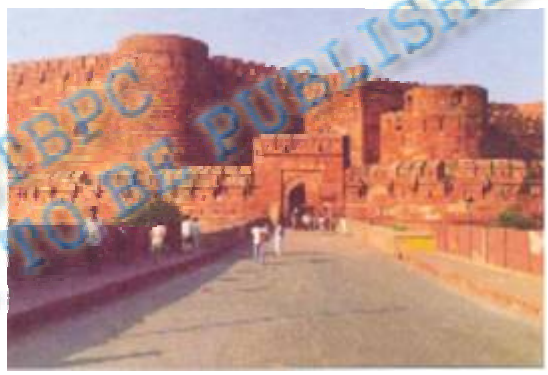

आगरा का किला

हुमायूँ का मकबरा

शाहजहाँ के शासन काल में मुगलकालीन भव्य इमारतों को बनाया गया। यह काल अपेक्षाकृत शांत और शासन के स्तर पर काफी समृद्ध था, यद्यपि जनता इस काल में ज्यादा

© RSTBPC NOT TO BE PUBLISHED WEBCOPY

परेशान रही क्योंकि सबसे अधिक अकाल इसी काल में हुए। इस समय बनने वाली भव्य इमारतों के पीछे एक तर्क यह भी दिया जाता है कि जनता को कठिनाइयों से निकालने के उद्देश्य से शाहजहाँ व्यापक स्तर पर इमारतों का निर्माण करवा रहा था ताकि लोगों को लगातार काम मिल सके। इस काल में बनने वाली इमारतों में संगमरमर का इस्तेमाल बड़े पैमाने पर किया गया। साथ ही स्तंभों तथा दीवारों पर रत्न जड़ित नक्काशी (पितरादूरा) का प्रयोग भी खूब किया गया। इन दोनों के इस्तेमाल से निर्मित ताजमहल स्थापत्य कला का एक अभूतपूर्व उदाहरण है। इसकी प्रमुख विशेषता उसका विशाल गुम्बद तथा मुख्य भवन के चबूतरे के किनारे पर खड़ी चार मीनारें हैं। संगमरमर के सुंदर झरोखे, जड़े हुए कीमती पत्थरों तथा छतरियों से इसकी सुन्दरता बहुत बढ़ जाती है।

एतमादुद्दौला का मकबरा

ताजमहल

इसके अलावा इसके चारों तरफ लगाए गए सुसज्जित बाग से यह और भी प्रभावशाली लगता है। इस काल में

पितरा दूरा–उत्कीर्ण संगमरमर अथवा बलूआ पत्थर पर रंगीन ठोस पत्थरों को दबाकर बनाया गया सुन्दर तथा अलंकृत नमूने

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

आगरा तथा दिल्ली में भव्य मस्जिदों का निर्माण भी करवाया गया। शाहजहाँ ने दिल्ली में शाहजहाँबाद नामक नवीन नगर की स्थापना 1638 ई॰ में की जहाँ प्रशासनिक भवन के रूप में लाल किला का निर्माण करवाया गया। यह किला लाल बलुआ पत्थर से बनाया गया जो अपने निर्माण काल से शक्ति और सत्ता का केन्द्र बना हुआ है।

शाहजहाँ के काल में निर्माण कार्य अनवरत रूप से चलते रहे विशेष रूप में आगरा और दिल्ली में। उसने सबसे अधिक ध्यान सार्वजनिक और निजी सभा कक्षों (दीवाने–ए–आम, दीवाने–ए–खास) के निर्माण पर दिया। निर्माण में इस बात पर ध्यान दिया गया कि बादशाह के बैठने का आसन ऊँचा हो ताकि सभी का ध्यान उसके तरफ रहे। उसके सिंहासन के पीछे पितरादूरा का जो काम किया गया है उसमें चित्रकारी भी शामिल है। यह उसकी शक्ति न्याय प्रियता और पृथ्वी पर ईश्वर के प्रतिनिधि इत्यादि का आभास कराने के उद्देश्य से था।

दिल्ली स्थित लालकिले का चित्र

औरंगजेब के शासन काल में स्थापत्य कला का विकास शिथिल पड़ गया। वस्तुतः उसका शासन अपने पुर्ववर्ती की अपेक्षा अशांत रहा। उसे निरंतर आन्तरिक विद्रोहों का सामना करना पड़ा। साथ ही साम्राज्य को नुकसान पहुँचाने वाले कई कारक भी उसी काल में उभरकर सामने आए जिसके विषय में आप अध्याय चार में पढ़ा है। औरंगजेब ने लाल किला में मोती मस्जिद एवं अपनी पत्नी की

मनेर स्थित शाहदौलत का मकबरा

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

याद में महाराष्ट्र के औरंगाबाद में बीबी का मकबरा बनवाया। लेकिन यह इमारत मुगल काल के उस भव्यता को प्रदर्शित नहीं करते, जो उसकी विशेषता थी।

मुगल शैली का बिहार में सबसे सुन्दर उदाहरण 1617 में निर्मित शाह दौलत का मनेर स्थित मकबरा है, जिसे जहाँगीर के समय में बिहार के प्रांत पति इब्राहिम खाँ काकर ने बनवाया था। इसका निर्माण लाल बलुआ पत्थर से हुआ है। इसमें अकबरकालीन मुगल शैली की सभी विशेषताएँ दिखाई पड़ती हैं। मुगल वास्तुकला की शैली और परम्परा 18वीं तथा 19वीं शताब्दी में नवोदित राज्यों के संरक्षण में जारी रहा। इसका एक अच्छा उदाहरण अवध के नबावों द्वारा लखनऊ में निर्मित इमारतें हैं।

## सासाराम स्थित शेरशाह का मकबरा

बिहार के सासाराम में तीन मकबरों का निर्माण 16 वीं सदी में शेरशाह और उसके पुत्रों द्वारा करवाया गया। इसमें शेरशाह का मकबरा, जो अफगान शैली में निर्मित है, स्थापत्य कला में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यह अफगान शैली का संपूर्ण भारत में सबसे अच्छा उदाहरण है। यह इमारत 1545 ई. में बनकर तैयार हुआ। झील के मध्य स्थित अष्टकोणीय आकार का यह मकबरा चौकोर चबूतरे पर बना है जिसके चारों ओर सीढ़ियाँ हैं। इसकी छत मध्य गुंबद है जो अपने संतुलित रूप और अपने सादगी के लिए जाना जाता है। शेरशाह ने इसे अपने जीवनकाल में ही निर्मित करवाया। यह इमारत तुर्क अफगान स्थापत्य और मुगल स्थापत्य कला जिसके विषय में आपने इसी पाठ में पढ़ा है, के बीच सम्पर्क बिंदु है।

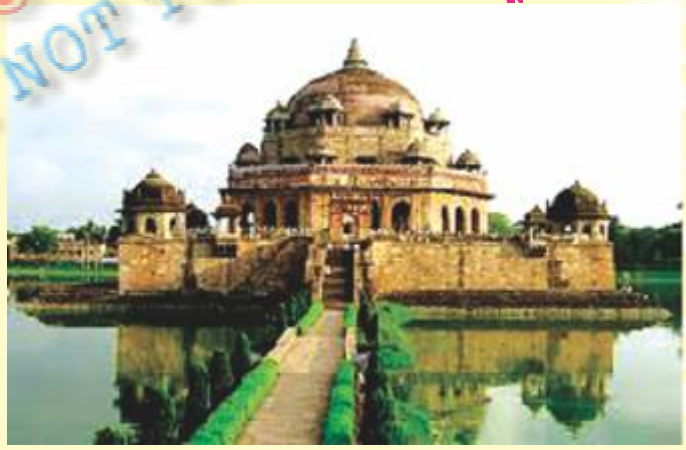

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED WEBCOPY

**इसने मुगलों द्वारा निर्मित भव्य इमारतों के लिए एक मजबूत रूपरेखा पेश की थी। इस मकबरे की सम्पूर्ण विशेषता को मुगलों ने अपनी इमारतों में अपनाकर उसे विकसित किया। शेरशाह का मकबरा बिहार को स्थापत्य कला के क्षेत्र में भारत में एक विशिष्ट पहचान दिलाता है।**

## अभ्यास

### आओ याद करें :–

1. मध्यकाल में मंदिर निर्माण की कितनी शैलियाँ मौजूद थीं।

   (क) चार (ख) पाँच

   (ग) तीन (घ) दो

2. बिहार में नागर शैली में बने मंदिरों का सबसे अच्छा उदाहरण कौन–सा है।

   (क) महाबोधि मंदिर (ख) देव का सूर्य मंदिर

   (ग) पटना का महावीर मंदिर (घ) गया का विष्णु मंदिर

3. मुसलमानों द्वारा बिहार में बनाई गई सबसे महत्वपूर्ण इमारत कौन है ?

   (क) मलिकबया का मकबरा (ख) बेगु हजाम का मसिजद

   (ग) तेलहड़ा का मस्जिद (घ) मनेर स्थित मकबरा

4. मुगल कालीन स्थापत्य कला अपने चरम पर कब पहुँचा।

   (क) अकबर के काल में (ख) जहाँगीर के काल में

   (ग) शाहजहाँ के काल में (घ) औरंगजेब के काल में

5. शाहजहाँ ने लाल किला का निर्माण दिल्ली में किस वर्ष करवाया ।

   (क) 1638 (ख) 1648

WEBCOPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

(ग) 1636 (घ) 1650

## आओ याद करें – सही और गलत की पहचान करें :

(i) उत्तर भारत में मंदिर निर्माण की द्रविड़ शैली प्रचलित थी।

(ii) कोणार्क का सूर्य मंदिर बंगाल में स्थित है।

(iii) मुगलकालीन वास्तुकला अकबर के शासन काल में अपने चरम विकास पर पहुँचा।

(iv) शेरशाह का मकबरा सल्तनत काल और मुगल काल के वास्तुकला के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाता है।

(v) बिहार में मुस्लिम उपासना स्थल निर्माण का प्रथम उदाहरण बेगु हजाम मस्जिद है।

## आइए विचार करें :

1. मंदिरों के निर्माण से राजा की महत्ता का ज्ञान कैसे होता है।
2. वर्त्तमान इमारत और मध्यकालीन इमारतों में उपयोग की जाने वाली साम्रगी के स्तर पर क्या अन्तर आप देखते हैं ?
3. मंदिर निर्माण की नागर और द्राविड़ शैलियों में अंतर को बताएँ।

## आइए करके देखें :

1. अपने आसपास किसी ऐसी इमारत या उपासना स्थल का पता लगाएँ जो शैली के स्तर पर मध्यकालीन मंदिरों, मस्जिदों या मकबरों से समानता रखता हो।
2. अपने आसपास किसी पार्क या बाग की सैर करके उसका वर्णन करें। यह भी बताएँ कि किस अर्थ में यह मुगल कालीन बाग से भिन्न है।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED